http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2023) वर्ष 3, अंक 5, 7-10

Article ID: 275

भारत के मवेशियों में गांठदार त्वचा रोग का प्रकोप

मीठा लाल मीना[1], हंसा जाट[2], राजन कुमार मीना[3]

[1]रिसर्च स्कॉलर और [2,3]एम.एससी.

[1,2]पशुपालन और डेयरी विज्ञान विभाग और [3]कृषि अर्थशास्त्र विभाग

राजा बलवंत सिंह महाविद्यालय, बिचपुरी, आगरा-283105 (उ.प्र.)

गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी) का ब्रेकआउट मई 2022 से भारत में कई राज्यों को प्रभावित कर चुका है। इस बीमारी की उत्पत्ति 1929 में जाम्बिया में हुई थी। भारत ने अगस्त 2019 में अपनी पहली गांठ वाली त्वचा रोग फैलने की सूचना दी थी। एलएसडी कैप्री पॉक्स के कारण होने वाली एक संक्रामक एपिजूटिक बीमारी है। वायरस, जो मवेशियों के बीच फैलता है। संचरण का प्रमुख तरीका वेक्टर-जनित है। एलएसडी के लिए कोई विशिष्ट उपचार नहीं है। वर्तमान निवारक उपायों में टीकाकरण, गोजातीय पशुओं का संचलन नियंत्रण और संगरोध, वेक्टर नियंत्रण के माध्यम से जैव सुरक्षा को लागू करना शामिल है। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि यह मनुष्यों को प्रभावित कर सकता है। पिछले प्रकोप की तुलना में भारत में वर्तमान प्रकोप में रुग्णता दर की एक विस्तृत श्रृंखला है, और मवेशियों के बीच मृत्यु दर की उच्च श्रेणी है। प्रकोप के परिणामस्वरूप डेयरी किसानों के लिए भारी आर्थिक प्रभाव पड़ा है, जो सोशल मीडिया के माध्यम से गलत सूचना के प्रसार से और बढ़ गया है।

मामलों की जनसांख्यिकी

- 2022 में, पुष्ट एलएसडी के मामले ज्यादातर भारत के उत्तरी और पश्चिमी राज्यों में देखे गए।
- गुजरात के लगभग 20 जिले, राजस्थान के 11 जिले और हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और अंडमान निकोबार जैसे अन्य राज्य प्रभावित हुए।
- राजस्थान सबसे अधिक प्रभावित राज्य है। मामलों की संख्या आम तौर पर गीले, गर्म मौसम (मानसून) के दौरान बढ़ जाती है, जब अधिक रोगवाहक मौजूद होते हैं, और शुष्क मौसम के दौरान घट जाती है।
- गांठदार त्वचा रोग एक झुंड में केवल कुछ मवेशियों को प्रभावित कर सकता है, हालांकि अन्य जानवर उप नैदानिक रूप से संक्रमित हो सकते हैं।

संचरण का तरीका (प्रमुख मोड और अन्य प्रलेखित मोड)

- गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी) मवेशियों और भैंसों का एक संक्रामक विषाणुजनित रोग है, जो पॉक्सविरिडे परिवार के कैप्रिपोक्स विषाणु के कारण होता है।
- एलएसडी एक वेक्टर-जनित रोग है, जो टिक्स, मच्छरों, अन्य रक्त-चूसने वाले कीड़ों द्वारा प्रेषित होता है; इस रोग के कारण पशुओं के शरीर पर गांठे पड़ जाती हैं और जब उन पर मक्खियां और मच्छर बैठ जाते हैं, तो वे संक्रमण को अन्य स्वस्थ पशुओं में स्थानांतरित कर देते हैं।
- बछड़े संक्रमित गायों के सीधे संपर्क में आने से संक्रमित हो सकते हैं।

चिकत्सीय संकेत

- इस रोग में 2-3 दिनों तक हल्का बुखार रहता है, इसके बाद पूरे शरीर में त्वचा पर कड़ी, गोल त्वचीय पिंड (व्यास में 25 सेमी) का विकास होता है।
- ये पिंड परिबद्ध, दृढ़, गोल, उभरे हुए होते हैं और इसमें त्वचा, चमड़े के नीचे के ऊतक और कभी-कभी मांसपेशियां शामिल होती हैं
- लक्षणों में मुंह, ग्रसनी और श्वसन पथ में घाव, दुर्बलता, बढ़े हुए लिम्फ नोड्स, अंगों की सूजन, दूध उत्पादन में कमी, गर्भपात, बांझपन और कभी-कभी मृत्यु शामिल हो सकती है।
- रोग के कारण भ्रूण जल्दी मर जाता है, आंखों में जलन, आंखों में पानी आना, बाँझपन हो जाता है और यह घातक हो सकता है।
- रोग की गंभीरता मवेशियों की नस्लों के बीच काफी भिन्न होती है। कुछ व्यक्तिगत मवेशियों में केवल कुछ ही घाव होते हैं; अन्य गंभीर नैदानिक लक्षण विकसित करते हैं।
- युवा बछड़े और स्तनपान कराने वाली गायें भी अधिक गंभीर रूप से प्रभावित होती हैं। कई मवेशी गंभीर दुर्बलता, लंगड़ापन, केराटाइटिस, पेचिश, लंगड़ापन, निमोनिया, मास्टिटिस और मायियासिस से पीड़ित होते हैं, और कई महीनों तक दूध उत्पादन में गिरावट आती है।

बछड़े में एलएसडी

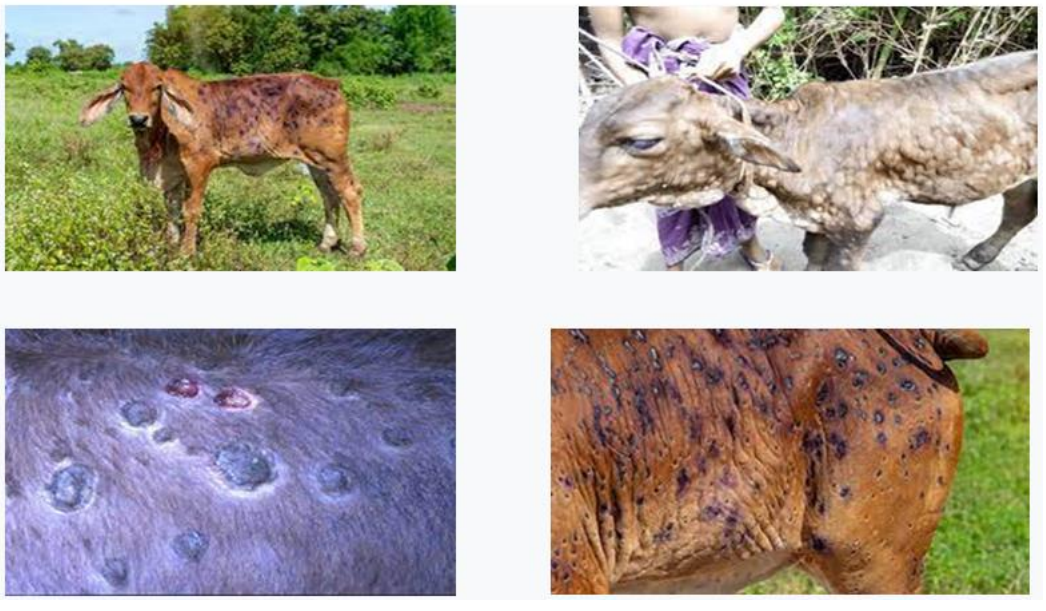

एलएसडी त्वचा पिंड

रुग्णता और मृत्यु दर

- हालांकि संक्रमित पशु अक्सर 2-3 सप्ताह की अवधि के भीतर ठीक हो जाते हैं, लेकिन स्तनपान कराने वाले मवेशियों में कई हफ्तों तक दूध की पैदावार में कमी आती है।
- रुग्णता दर लगभग 10-20% है और मृत्यु दर लगभग 1-5% है।
- उपलब्ध उपचार
- एलएसडी के लिए कोई विशिष्ट उपचार नहीं है, हालांकि, द्वितीयक जीवाणु संक्रमण के लिए आवश्यक एंटीबायोटिक्स सहित सहायक देखभाल सहायक हो सकती है।
- मक्खी के हमले और द्वितीयक संक्रमणों को कम करने के लिए घाव की मरहम-पट्टी का उपयोग किया गया है।

रोकथाम और नियंत्रण

- बीमार/संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग करना।
- ज्वर संबंधी गांठदार त्वचा रोग के संदेह वाले किसी भी जानवर को अप्रभावित जोत या खेत में नहीं लाया जाना चाहिए।
- प्रभावित गांवों और पशु जोतों में, प्रभावित पशुओं को आम चराई से बचाकर अप्रभावित पशुओं से अलग रखा जाना चाहिए और इस तरह सीधे संपर्क किया जाना चाहिए।
- प्रभावित क्षेत्रों में वेक्टर आबादी को कम करने के प्रयास किए जाने चाहिए।
- एलएसडी के यांत्रिक संचरण को कम करने के लिए अप्रभावित जानवर को कीट (टिक, मक्खियों, मच्छरों, पिस्सू, मिडज) विकर्षक के साथ लगाया जाना चाहिए।
- प्रभावित क्षेत्रों से मुक्त क्षेत्रों और स्थानीय पशु बाजारों में पशुओं की आवाजाही पर सख्त नियंत्रण सुनिश्चित करें।
- प्रभावित क्षेत्रों में रोग की पुष्टि होते ही जीवित पशुओं के व्यापार, मेलों में भाग लेने, शो में भाग लेने पर तत्काल रोक लगा देनी चाहिए।
- प्रभावित पशुओं से नमूने लेने के दौरान उपयोग किए जाने वाले व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) आदि के निपटान के लिए सभी जैव सुरक्षा उपायों और सख्त स्वच्छता उपायों का पालन किया जाना चाहिए।

टीकाकरण

- संक्रमित गांव की पहचान की जाएगी।
- प्रभावित गांव के आसपास के 5 किमी तक के गांवों में रिंग टीकाकरण किया जाएगा।
- मवेशियों और भैंसों को 04 महीने और उससे अधिक की उम्र में उपलब्ध गोट पॉक्स वैक्सीन के साथ एस/सी रूट के माध्यम से जीटीपीवी वैक्सीन (उत्तरकाशी स्ट्रेन) के 1035 टीसीआईडी टीसीआईडी50 के साथ टीका लगाया जाना चाहिए।
- प्रभावित पशुओं को टीका नहीं लगाया जाना चाहिए।

पशुओं का टीकाकरण

इलाज

- बीमार पशुओं को अलग-थलग रखना चाहिए।
- पशु चिकित्सक के परामर्श से प्रभावित पशुओं का रोगसूचक उपचार किया जा सकता है।
- द्वितीयक संक्रमण की जांच के लिए 5-7 दिनों के लिए एंटीबायोटिक्स देने पर द्वितीयक जीवाणु संक्रमण की जांच करने के लिए मामला दर मामला आधार पर विचार किया जा सकता है।
- विरोधी भड़काऊ और एंटीहिस्टामाइन तैयारी के प्रशासन पर भी विचार किया जा सकता है। इलाज।
- पायरेक्सिया के मामले में, ज्वरनाशक दवाएं दी जा सकती हैं।
- फटी हुई त्वचा पर मक्खी विकर्षक गुण वाले एंटीसेप्टिक मरहम लगाने की सिफारिश की जाती है
- पैरेंट्रल / ओरल मल्टीविटामिन लेने की सलाह दी जाती है।
- संक्रमित पशुओं के लिए तरल भोजन, नरम चारा और चारा और रसीला चारा खिलाने की सिफारिश की जाती है।

एलएसडी का उपचार

शव का निस्तारण: एलएसडी से प्रभावित जानवरों के शवों का निपटान मृत्यु दर के मामलों में, जानवरों के शवों को गहरे दफन द्वारा निपटाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

रोग के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि संचरण और महामारी विज्ञान, और टीकाकरण जैसे प्रभावी निवारक उपायों के कार्यान्वयन पर ध्यान देने से बेहतर रोग नियंत्रण हो सकता है। इसलिए, स्थानिक क्षेत्रों में सटीक और समय पर निदान, एलएसडीवी के सजातीय तनाव के साथ टीकाकरण, वेक्टर नियंत्रण, पशु आंदोलन प्रतिबंध और प्रजनन के लिए उपयोग किए जाने वाले सांडों के एलएसडीवी परीक्षण को आगे प्रसार को नियंत्रित करने के लिए उपकरणों के रूप में अत्यधिक अनुशंसित किया जाता है।